City भास्कर
जोधपुर, रविवार 8 सितंबर, 2024 | 14

राष्ट्रीय राजस्थानी युवा उच्छब : दो दिवसीय आयोजन में राजस्थानी सहित विभिन्न भाषाओं के साहित्यकार ले रहे हिस्सा

# हरेक युवा रचनाकार में बदळाव री खिमता हुवै : प्रो. चारण

**जोधपुर/उदयपुर** | आज का युवा रचनाकार राजस्थानी ज्ञान परंपरा एवं भाषा-साहित्य का भविष्य है। युवा रचनाकार को समय के साथ आधुनिक युगबोध या नई दृष्टि से सृजन करना चाहिए। युवा रचनाकार अनूठी शक्ति का पर्याय होता है इसलिए हर युवा में बदळाव की ताकत है। ये विचार उदयपुर में चल रहे राष्ट्रीय युवा उच्छब में साहित्य अकादेमी में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक एवं ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रो. (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने कहे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि इस सृष्टि की गतिशीलता के लिए रस का होना आवश्यक है। रस के बिना जीवन का कोई सार नहीं इसलिए युवा रचनाकारों को अपने लेखन में रस छलकाना चाहिए।

विद्वान डॉ. देव कोठारी ने कहा कि राजस्थानी विश्व की समृद्ध भाषा है मगर आजादी के 76 वर्ष बाद इसको संवैधानिक मान्यता नहीं मिलना प्रदेशवासियों का दुर्भाग्य है। उन्होंने कहा कि राजस्थानी की संवैधानिक मान्यता के लिए युवाओं को अहिंसात्मक आंदोलन करना चाहिए। समारोह की मुख्य अतिथि मोहनलाल सुखाड़िया विवि के कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) सुनिता मिश्रा थीं।

इस मौके राजस्थानी कवि-आलोचक डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित की अध्यक्षता में हुए तकनीकी सत्र में युवा लेखक डॉ.गौरी शंकर निमिवाल श्रीगंगानगर, महेन्द्रसिंह छायण जैसलमेर, पूनमचंद गोदारा बीकानेर एवं नंदू राजस्थानी टोंक ने राजस्थानी युवा लेखन विषय पर अपने आलोचनात्मक रिसर्च पेपर पढ़े। साहित्यिक दृष्टि बहुत ही महत्वपूर्ण इस दो दिवसीय राष्ट्रीय राजस्थानी युवा उत्सव में अनेक भाषाओं के प्रतिष्ठित विद्वान लेखकों, विश्वविद्यालय शिक्षक, साहित्य प्रेमी, रिसर्च स्कॉलर व स्टूडेंट्स ने हिस्सा लिया।

## अंजसजोग है समकालीन राज. युवा लेखनः डॉ. राजपुरोहित

राजस्थानी भाषा-साहित्य के कवि-आलोचक एवं साहित्य अकादेमी के सर्वोच्च पुरस्कार से पुरस्कृत डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने 21वीं सदी री राजस्थानी युवा लेखन विषयक व्याख्यान में कहा कि राजस्थानी भाषा-साहित्य की अद्भुत परंपरा है जिसे युवाओं को समझना चाहिए क्योंकि जब तक परंपरा को समझेंगे नहीं, नया सृजन नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि युवाओं को मातृभाषा में आधुनिक युगबोध एवं मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण साहित्य सृजन करना चाहिए। डॉ. राजपुरोहित ने समकालीन युवा रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं पर महत्वपूर्ण एवं आलोचनात्मक विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समकालीन राजस्थानी साहित्य अंजसजोग है।